महोपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत
।। श्री शङ्खेश्वरपार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।।

ऐंकारस्मृतिसावधानमनसा स्तोतुं प्रवर्ते महा
मोहापोहपरायणं जनमनोऽभीष्टार्थसार्थप्रदम्।
श्रीशङ्खेश्वरभूषण, भगवतामग्रेसरं वासव-
श्रेणीवेणिमिलत्प्रसूनपटलीमाध्वीकधौतक्रमम् ।।१।।
मूर्तिस्ते जिनराज ! राजति जगद्दारिद्र्यविद्राविणी
स्वर्योषिन्नयनोन्मदालिपटलीपेपीयमानप्रभा।
शारीरान्तरदुःखतापजनितं खेदं नयन्ती व्ययं,
वल्लिः कल्पतरोरिव त्रिभुवनप्रख्यातसौरभ्यभूः ।।२।।
कामं दर्शनतोऽपि मन्नयनयोरूल्लासमातन्वती,
मच्चेतःकुमुदं विकासयितुमप्यह्याय बद्धादरा।
मद्ध्यानार्णवपूरपूरणपटुः स्वामिंस्तवोल्लासिनी,
मूर्तिः किञ्चन चन्द्रकान्तलहरीप्रागल्भ्यमभ्यस्यति ।।३।।
मूर्तिस्ते महनीयमोहमदिरोद्गारावधूर्णद्दशां,
व्याक्षेयं परमौषधीव नियतं निर्णाशयत्यञ्जसा।
येषां लोचनगोचराश्चिरमभूद् रोमाञ्चपुष्पाञ्चिताः,
ते किं नाम नमन्ति वामनयनालावण्यलक्ष्मीजुषः ।।४।।
मूर्तिस्ते स्नपनैर्न विभ्रमभरैः सांवर्तिकैश्चुक्षुभे,
पौलोमीचललोचनाञ्चलमिलद्भ्रूभङ्गसंसर्गिभिः
आबिभ्रत्कमठोपसर्गसहनी धैर्यप्रधानक्षमा,
स्वामिंस्तत्किममन्दमन्दरगिरिस्पर्द्धासमृद्धादरा ।।५।।
धाम ध्यायसि यत् पुरा त्रिजगतीधामातिशायि स्फुरन्,
तत्सङ्क्लान्तिवशादिवेयमनिशं मूर्तिस्तवोद्योतिनी।
अङ्गुष्ठात् पुरतस्तव क्रमभवादिग्भाललीलावहं,
नोचेत् सर्वसुरासुरैः कथमहो शक्त्या जितं रूपकम् ।।६।।
अद्यावद्यकलापतापदलनक्रीडामिवातन्वती,
मूर्तिः स्फूर्तिमती लता सुरतरोर्मूर्त्ता मयोद्वीक्षिता।
ब्रह्मज्ञानकलाविलासकुशलव्यापारपारङ्गतै-,
र्योगीन्द्रैरनुभूतवैभवविभो ! तेनानुमन्ये जनैः ।।७।।
मूर्त्तिस्ते प्रविभाति मोहतिमिरप्रध्वंसभानुप्रभा,
मूर्तिस्ते भवसिन्धुमध्यनिपतद्भव्योद्धृतौ नौर्दृढा।
मूर्तिस्ते सकलैहितार्थपटलीसम्पूरणे कामगौ-,
मूर्त्तिस्ते मम तीर्थनाथ ! सततं श्रेयः श्रिये कल्पताम् ।।८।।
प्रातर्योऽष्टकमेतत् प्रमुदितचेताः प्रभोः पुरः पढति,
कष्टसहस्रं तीर्त्वा लभतेऽसौ परममानन्दम् ।।९।।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का छंद

पास शंखेश्वरा सारकर सेवकां, देव कां एवडी वार लागे,
कोडी करजोडी दरबार आगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे १
प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोड असुराणने आप छोडो,
मुज महिराण मंजूषमां पेसीने, खलकना नाथजी बंध खोलो २

jainuniversity.org

जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज ऊंघे,
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जग काल मोंघे ३
भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तत्क्षण त्रीकमे तुं ज संभार्यो,
प्रगट पातालथी पलकमां ते प्रभु, भक्त जन तेहनो भय निवार्यो. ४
आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीन दयाल छे कोण दूजो,
'उदयरत्न' कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भयभंजणो एह पूजो ५

भाववाही स्तुतियाँ

ऐन्द्रश्रेणिनताप्रतापभवनंभव्याङ्घ्रिनेत्रामृतं,
सिद्धान्तोपनिषद्विचारचतुरै-र्प्रीत्याप्रमाणिकृता।
मूर्तिस्फूर्तिमतिसदाविजयते जैनेश्वरीविस्फूरन्,
मोहोन्मादघनप्रमादमदिरा-मत्तैरनालोकिता ।।१।।
मूर्तिस्ते जगतां महार्तिशमनी मूर्तिर्जनानन्दिनी,
मूर्तिर्वांछितदानकल्पलतिका मूर्तिर्सुधास्यन्दिनी।
संसाराम्बुनिधिं तरितुमनिशं मूर्तिर्दृढानौरियं,
मूर्तिर्नेत्रपथंगता जिनपतेः किं किं न कर्तुंक्षमः ।।२।।
नमस्ते समस्तेप्सितार्थप्रदाय, नमस्ते महार्हन्त्यलक्ष्मीप्रदाय,
नमस्ते चिदानंदतेजोमयाय, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।३।।
नमस्ते जगन्नाथविश्वैकनेतः, नमस्ते महामोह-मल्लैकजेतः,
नमस्ते सतां मोक्षशिक्षाविनेतः, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।४।।
नमस्ते प्रभो पार्श्वशंखेश्वराय, नमस्ते यशोगौरगोडीधराय,
नमस्ते श्री जिराउलीमंडनाय, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।।५।।
श्रीमद्गुर्जरदेशभूषणमणिं सर्वज्ञताधारकं
मिथ्याज्ञानतमः पलायनविधावुद्यत्प्रभं तापिनम्।
पार्श्वस्थायुकपार्श्वयक्षपतिना संसेव्यपार्श्वद्वयं,
श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथमहमानन्देन वन्दे सदा ।।६।।
ऐन्द्रश्रेणिनतावतंसनिकर भ्राजिष्णुमुक्ताफल-
ज्योतिर्जालसदालवाललहरीलीलाचितं पावितम्।
यत्पादाद्भुतपारिजातयुगलं भाति प्रभाभ्राजितं,
श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथजिनपं श्रेयस्करं संस्तुवे ।।७।।
श्रीपार्श्वं तीर्थनाथं प्रशमरसमयं केवलानन्दयुक्तं,
वामेयं पार्श्वयक्षैं सुरवरसहितैः सेवितं भूरिभक्त्या।
यस्य स्नात्राभिषेक पृथुतरकमलै निर्जरा यादवाः स्युः
ख्यातं शंखेश्वरं तं त्रिभुवनविहितख्यातकीर्तिं नमामि ।।८।।
शंखेश्वरं प्रणिदधे प्रकटप्रभावं,
त्रैलोक्यभावनिवहावगमस्वभावम्।
भावारिवारणहरिं हरिसेवनीयं,
वामेयमीश्वरममेयमहोनिधानम् ।।९।।
जरा जरासन्धनृपेण मुक्ता,
निश्चेष्टामातेनुषी कृष्ण सैन्यम्।
पलायिता यत्स्नपनाम्बुना तं,
शंखेश्वरं पार्श्वजिनं नमामि ।।१०।।
सच्चिदानन्द संपूर्ण विश्वज्ञं विश्वपावनम्।

jainuniversity.org

शंखेश्वरपुरोत्तंसं पार्श्वनाथं नमाम्यहम् ।।११।।
जय त्वं जगन्नेत्रपीयूषपात्र,
जय त्वं सुधांशुप्रभागौरगात्र!।
जय त्वं सदा मन्मनः स्थायिमुद्र,
जय त्वं जय त्वं जय त्वं जिनेन्द्र ।।१२।।
अरिहंत ! हे भगवंत ! तुझ पद पद्म सेवा मुझ होजो,
भवोभव विषे अनिमेष नयणे आपनुं दर्शन थजो,
हे दयासिंधु ! दीनबंधु ! दिव्यदृष्टि आपजो,
करी आप सम सेवक तणां संसार बंधण कापजो ।।१३।।
तारा थी न समर्थ अन्य दीननो उद्धारनारो प्रभु!
माराथी नहीं अन्य पात्र जगमां जोतां जडे हे विभु!
मुक्ति मंगल स्थान तोय मुझने इच्छा न लक्ष्मी तणी,
आपो सम्यग् रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाए घणी ।।१४।।
जे दृष्टि प्रभु दरिशन करे, ते दृष्टिने पण धन्य छे,
जे जीभ जिनवरने स्तवे, ते जीभने पण धन्य छे,
पीए मुदा वाणी सुधा, ते कर्ण युगलने धन्य छे,
तुज नाम मंत्र विशद धरे, ते हृदयने पण धन्य छे ।।१५।।
हे देव ! तारा दिलमां, वात्सल्यना झरणा भर्या,
हे नाथ ! तारा नयनमां, करुणा तणा अमृत भर्या,
वीतराग तारी मीठी मीठी, वाणीमां जादू भर्या,
तेथी ज तारा चरणमां, बालक बनी आवी चड्यां ।।१६।।
जेना गुणोना सिंधुना, बे बिन्दु पण जाणुं नहि,
पण एक श्रद्धा दिल महीं के, नाथ सम को छे नहि,
जेना सहारे क्रोड तरिया, मुक्ति मुज निश्चय सही,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचाग भावे हुं नमुं ।।१७।।
हे त्रण भुवनना नाथ! मारी, कथनी जई कोने कहुं?
कागल लख्यो पहोंचे नहीं, फरियाद जई कोने करुं?
तुं मोक्षनी मोझारमां, हुं दुःख भर्या संसारमां,
जरा सामुं पण जुओ नहीं, तो क्यां जई कोने कहुं? ।।१८।।
दया सिंधु ! दया सिंधु ! दया करजे दया करजे,
मने आ जंजीरोमांथी, हवे जल्दी छूटो करजे,
नथी आ ताप सहेवातो, भभूकी कर्मनी ज्वाला,
वर्षावी प्रेमनी धारा, हृदयनी आग बुझवजे ।।१९।।
हे प्रभु ! आनंददाता, ज्ञान हम को दीजीए,
शीघ्र सारे अवगुणो को, दूर हम से कीजीए,
लीजीए हमको शरण में, हम सदासारी बने,
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बने ।।२०।।
धन्वंतरी छो वैद्य छो, म्हारा जीवनना हे प्रभु !
भवरोगना वलगाडने मुझ दूर करजो हे विभु !
उपकार करी वीतराग मुजने ज्ञानदर्शन आपजो,

चरित्रमां निशदिन रहुं एवी सद्बुद्धि आपजो ।।२१।।
शत कोटि कोटि वार वंदन, नाथ ! मारा हे तने,
हे तरण तारणहार ! तुं स्वीकार मारा नमनने,
हे नाथ ! शुं जादु भर्या, अरिहंत शब्दोच्चारमां,
आफत बधी आशिष बने, तुज नाम लेता वारमां. ।।२२।।
रुप तारुं एवुं अद्भुत, पलक विण जोया करुं,
नेत्र तारा निरखी निरखी, पाप मुज धोया करुं,
हृदयना शुभ भाव परखी, भावना भावित बनुं,
झंखना एवी मने के, हुं ज तुज रूपे बनुं. ।।२३।।
वैराग्यनां रंगो सजी क्यारे प्रभु ! संयम ग्रहुं ?,
सद्गुण तणां शरणे रही स्वाध्यायनुं गुंजन करुं ?,
सवि जीवने दई देशना हुं धर्मनुं सिंचन करुं ?,
कर्मो थकी निर्लेप थईने, क्यारे हुं मुक्ति वरुं ? ।।२४।।
संसार घोर आपार छे, तेमां डूबेला भव्यने,
हे तारनारा नाथ ! शुं, भूली गया निज भक्तने,
मारे शरण छे आपनुं, नथी चाहतो हुं अन्यने,
तो पण प्रभु मने तारवामां, ढील करो शा कारणे ।।२५।।
कुंजर समा शुरवीर जे छे, सिंह सम निर्भय वळी,
गंभीरता सागर समी जेना हृदयने छे वरी,
जेना स्वभावे सौम्यता छे, पूर्णिमाना चंद्रनी
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भावे हुं नमुं. ।।२६।।
क्यारे प्रभु तुज स्मरणथी आंखो थकी अश्रु सरे ?,
क्यारे प्रभु तुज नाम वदतां, वाणी मुज गद्गद् बने ?,
क्यारे प्रभु तुज नाम सुणतां, देह रोमांचित बने,
क्यारे प्रभु मुज श्वासे श्वासे, नाम ताहरुं सांभरे ? ।।२७।।
याचक थईने हुं मांगु छुं, हे वीतरागी ! तारी कने,
महाविदेह क्षेत्रमां जावुं मारे, श्री सीमंधरस्वामी कने,
आठ वर्ष नानी वयमां, संयम लेवुं तारी कने,
घाती अघाती कर्म खपावी, क्यारे पहोंचु तारी कने ।।२८।।
दादा तारी मुखमुद्राने, अमिय नजरथी निहाळी रह्यो,
तारा नयनोमांथी झरतुं, दिव्य तेज हुं झीली रह्यो,
क्षणभर आ संसारनी माया, तारी भक्तिमां भूली गयो,
तुज मूरतिमां मस्त बनीने, आत्मिक आनंद माणी रह्यो. ।।२९।।
सुण्या हशे पूज्या हशे, निरख्या हशे पण को क्षणे,
हे जगतबंधु ! चित्त मां, धार्या नहीं भक्ति वसे,
जन्म्यो प्रभु ! ते कारणे, दुःखभार आ संसारमां,
हा ! भक्ति ते फलथी नथी, जे भाव शून्याचारमां. ।।३०।।

चैत्यवंदन संग्रह

१ ।। ॐ नमः पार्श्वनाथाय ।।

ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते।
ह्रीं धरणेन्द्र वैरुट्या, पद्मादेवी युताय ते ।।१।।
शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-धृति-कीर्ति विधायिने।
ॐ ह्रीं द्विड् व्याल-वैताल-सर्वाधि-व्याधिनाशिने ।।२।।
जया-जिताख्या-विजयाख्या-पराजितयान्वितः।
दिशां पालै-र्ग्रहैर्यक्षैर्विद्यादेवीभिरन्वितः ।।३।।
ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथतां,
चतुःषष्टिसुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्रचामरैः ।।४।।
श्री शंखेश्वरमंडण ! पार्श्वजिन ! प्रणत-कल्पतरु-कल्प।
चूरय दुष्टव्रातं पूरय मे वांछितं नाथं. ।।५।।

२. आश पूरे प्रभु पासजी ।।

आशपूरे प्रभु पासजी, तोडे भवपास,
वामा माता जनमिया, अहि लंछन जास ।।१।।
अश्वसेन सुत सुख करुं, नव हाथनी काया,
काशी देश वाराणसी, पुण्ये प्रभु आया ।।२।।
एकसो वरसनुं आउखुं, पाली पार्श्वकुमार,
पद्म कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार ।।३।।

३. जय चिन्तामणि पार्श्वनाथ

जय चिन्तामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवनस्वामी,
अष्टकर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी ।।१।।
प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहिए,
प्रभु नामे भवभयतणा, पातक सवि दहिये ।।२।।
ॐ ह्रीं वर्ण जोडी करी, जपीएँ पारसनाम,
विष अमृत थई परिणमे, लहीए अविचल ठाम. ।।३।।

४. प्रभु पार्श्वजी ताहरुं नाम मीठुं

प्रभु पार्श्वजी ताहरुं नाम मीठुं, तिहुं लोकमां एटलुं सार दीठुं,
सदा समरतां सेवतां पाप नीठुं, मन माहरे ताहरुं ध्यान बेठुं ।।१।।
मन तुम पासे वसे रात दिसे, मुज पंकज नीरखवां हंस दीसे,
धन्य ते घडी नयण दीसे, भली भक्ति भावे करी विनवीजे ।।२।।
अहो ! एह संसार छे दुःखघोरी, इंद्रजालमां चित्त लाग्युं ठगोरी,
प्रभु मानीये विनंति एक मोरी, मुज तार तुं तार बलिहारी तोरी ।।३।।
सही स्वप्न जंजालने संग मोह्यो, घडीयालमां काल रमतो न जोयो,
मुधा एम संसारमां जन्म खोयो, अहो ! घृत तणे कारणे जल विलोयो ४
एतो भ्रमरलो केसुआं भांति धायो, जई शुकतणी चंचुमांहे भराणो,
शुके जंबु जाणी गले दुःख पायो, प्रभु लालचे जीवडो एम वाम्यो ५
नम्यो भर्म भूल्यो रच्यो कर्म भारी, दया धर्मनी शर्म में न विचारी,
तोरी नम्रवाणी परमसुखकारी, तिहुं लोकना नाथ में नवि संभारी ६
विषय वेलडी शेलडी करीय जाणी, भजी मोह तृष्णा तजी तुज वाणी,
एहवो भलो भूंडो निज दास जाणी, प्रभु राखीये बांहीनी छायमांही ७
मोरा विविध अपराधनी कोडी सहीये, प्रभु शरण आव्या तजी लाज लहीए,
वली घणी घणी विनंति एम कहीये, मुज मानससरे परमहंस रहीए ८

JainUniversity.org
सर्व ज्ञानाय भवतु

एम कृपा मूर्ति पार्श्वस्वामि, मुगति गामी ध्याईए,
अतिभक्ति भावे विपत्तिजावे, परमसंपत्ति पाईए,
प्रभु महिमा सागर गुण वैरागर, पास अंतरिक्ष जे स्तवे,
तस सकल मंगल जय जयारव, 'आनंदवर्धन' विनवे ९

५. सेवो पार्श्व शंखेश्वरा मन शुद्धे

सेवो पार्श्व शंखेश्वरा मन शुद्धे, नमो नाथ निश्चे करी एक बुद्धे,
देवी-देवता अन्यने शुं नमो छो, अहो ! भव्य लोको भूलां का भमो छो. १
त्रिलोकना नाथने शुं तजो छो, पड्यां पासमां भूतने का भजो छो,
सुरधेनु छंडी अजाशुं अजो छो, महापंथ मूकी कुपंथे व्रजो छो. २
तजे कोण चिंतामणि काच माटे, ग्रहे कोण रासभने हस्ति साटे?,
सुरद्रुम उपाडी कोण आंक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे. ३
किहां कांकरोने किहा मेरू शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग,
किहां विश्वनाथ किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा. ४
पूजो देव प्रभावती प्राणनाथ, सहु जीवने जे करे छे सनाथ,
महातत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेना दुःख दारिद्र दूर पलाये. ५
पामी मानुषो ने वृथा कां गमो छो, कुशीले करी देहने कां दमो छो,
नहि मुक्ति वास विना वीतराग, भजो भगवंत तजो दृष्टिराग. ६
'उदयरत्न' भाखे सदा हेत आणी, दया भाव कीजे प्रभु दास जाणी,
आज म्हारे मोतीडे मेह वूठ्यां, प्रभु पार्श्व शंखेश्वरो आज तूठ्यां. ७

६. नित्य जाप जपीये पाप खपीये - स्वामि नाम शंखेश्वरो

सकल भविजन चमत्कारी, भारी महिमा जेहनो,
निखिल आतम रमा राजीत, नाम जपीये तेहनो;
दुष्ट कर्माष्ट गंजरी जे, भविक जन मन सुखकरो,
नित्य जाप जपीये पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो. १
बहु पुण्यराशि देवकाशि तत्थ नगरी वणारसी,
अश्वसेन राजा राणी वामा, रुपे रति तनु सारिखी;
तस कुखे चौद सुपन सूचित, स्वर्गथी प्रभु अवतर्यो नित्य० २
पोष मासे कृष्ण पक्षे, दशमी दिन प्रभु जनमीयो,
सुरकुमरि सुरपति भक्ति भावे, मेरु श्रृंगे स्नापियो;
प्रभाते पृथ्वीमति प्रमोदे, जन्म महोत्सव अति कर्यो नित्य० ३
त्रण लोक तरुणी मन प्रमोदी, तरुण वय जब आवीया,
तव मात ताते प्रसन्न चित्ते, भामिनी परणाविआ;
कमठ शठ कृत अग्निकुंडे, नाग बलतो उद्धर्यो नित्य० ४
पोषवदी एकादशी दिने, प्रव्रज्या जिन आदरे,
सुर असुर राजी भक्ति साजी, सेवना झाझी करे;
काउस्सग्ग करतां देखी कमठे, कीध परिषह आकरो नित्य० ५
तव ध्यान धारा दृढ जिनपति, मेघ धारे नवि चल्यो,
चलित आसन धरण आयो, कमठ परिसह अटकल्यो;
देवाधिदेव नी करे सेवा, कमठने काढी परो नित्य० ६
क्रमे पामी केवलज्ञान कमला, संघ चउविह स्थापीने,
प्रभु गया मोक्षे समेतशिखरे, मास अणसण पालीने;

jainuniversity.org

शिवरमणी रंगे रमे रसियो, भविक तस सेवा करो नित्य० ७
भूत प्रेत पिशाच व्यंतर, जलण जलोदर भय टले,
राजा राणी रमा पामे, भक्ति भावे जो मले;
कल्पतरुथी अधिक दाता, जगत माता जय करो नित्य० ८
जरा जर्जरी भूत यादव, सैन्य रोग निवारतां,
वढीयार देशे बीराजे, भविक जीवने तारता,
ए प्रभु तणा पदपद्म सेवा, 'रूप' कहे प्रभुता वरो नित्य० ९

७. श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम्

(शालिनी छन्दः)

गोडीग्रामे स्थंभने चारुतीर्थे, जीरापल्यां पत्तने लोद्रवाख्ये,
वाणारस्यां चापि विख्यातकीर्तिं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।१।।
इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामादेव्या नन्दनं देववन्द्यम्,
स्वर्गे भूमौ नागलोले प्रसिद्धं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।२।।
भित्वा भेद्यं कर्मजालं विशालं, प्राप्या तं तं ज्ञानरत्नं चिरत्नम्,
लब्धामन्दानन्दनिर्वाणसौख्यं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।३।।
विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्षलक्ष्मीकलत्रम्,
अम्भो जाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।४।।
वर्षे रम्ये खड्गदोन्नागचन्द्र-संख्ये मासे माघवे कृष्णपक्षे,
प्राप्तं पुन्यैर्दर्शनं यस्य तं च, श्री पार्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थम् ।।५।।

JainUniversity.org
सर्व ज्ञानाय भवतु